4/7/2020

Lecture Notes

B III Hons
Paper IV

Topic -

Kelman's three-Process theory

Dr. Kus Sadhana Prasad
Associate Prof.
Dept of Psychology

6/7/2020

Q. Critically examine Kelman's three-process theory of attitude.

Ans:- मनोवृति के स्वरूप में स्थाइत्व पाई जाती है अर्थात् एकबार मनोवृति जिस प्रकार निर्मित हो जाती है बाद में सरलता से उसमें परिवर्तन नहीं होता है क्योंकि व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी के रूप में सामाजिकरण की प्रक्रियाओं (Processes of socialization) के द्वारा उसे सीखता है। पर सामाजिक प्रभाव, दबाव, किसी विश्वास की समाप्ति तथा मनोवृति की दिशा में परिवर्तन आदि के कारण मनोवृति परिवर्तन होता है।

Kelman (1961) ने मनोवृति परिवर्तन (Attitude change की व्याख्या के लिए त्रि-प्रक्रिया सिद्धांत (three-Process theory of attitude change) प्रस्तुत किया। इसमें उन्होंने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि (1) मनोवृति परिवर्तन में कौन-कौन सी प्रक्रियाएँ संलग्न रहती है। (2) उन्होंने उन परिस्थितियों की भी चर्चा की है जिनमें मनोवृति परिवर्तन हुआ करती है तथा उन प्रवृतियों की भी चर्चा की है जिनमें मनोवृति परिवर्तन नहीं होती। (3) उन परिस्थितियों की चर्चा की है जिनमें मनोवृति परिवर्तन का स्वरूप स्थाई होता है तथा उन प्रवृतियों का उल्लेख किया है जिनमें इनका स्वरूप अस्थाई होता है।

Kelman के सिद्धांत में मनोवृति परिवर्तन के लिए तीन निश्चित प्रक्रियाएँ हैं :—

1. अनुपालन (Compliance)
2. तादात्मीकरण (Identification)
3. आत्मसातीकरण (Internalization)

(1) अनुपालन (Compliance) :— एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के व्यवहारों का अनुपालन किसी पुरस्कार (reward) या मान्यता मिलने के प्रलोभन में करता है। दूसरे शब्दों में दूसरे व्यक्ति या समूह के विचारों के साथ आन्तरिक रूप से सहमत नहीं रहने पर भी जब कोई व्यक्ति वाह्य रूप से उनके विचारों का अनुपालन करता है तब इस प्रक्रिया से उसके मनोवृति में परिवर्तन होता है। इस तरह से मनोवृति परिवर्तन के द्वारा व्यक्ति

किसी सामाजिक दबाव तथा अस्वीकृति से बच जाता है परन्तु अनुपालन के द्वारा वह मनोवृत्ति परिवर्तन स्थाई नहीं होता, क्योंकि प्रभाव डालने वाला व्यक्ति हट जाता है मनोवृत्ति परिवर्तन फिर अपने पूर्व स्थिति में आ जाती है। उदाहरण के लिए एक कर्मचारी जो यह जानता है कि उसके मालिक को अंग्रेजी भाषा का शुद्ध प्रयोग नहीं आता और वह उनके गलत भाषा की भी इस लिए सराहना करता है कि वह मालिक की नाराजगी से बच जाए। परन्तु मालिक का प्रभाव हटते ही उसमें व्यक्ति में हुए मनोवृत्ति परिवर्तन भी स्वाभाविक स्थिति में फिर आ जाता है।

② तादात्मीकरण (Indentification) :— तादात्मीकरण की प्रक्रिया के द्वारा जब व्यक्ति दूसरे व्यक्ति या समूह के वैसे व्यवहारों को अपना लेता है जो उसके लिए संतोषप्रद नहीं हो, तो उसके मनोवृत्ति में भी परिवर्तन हो जाता है। तादात्मीकरण के द्वारा मनोवृत्ति परिवर्तन होने पर एक व्यक्ति अन्य व्यक्ति या समूह के उद्देश्य को अपना उद्देश्य, मान लेता है। उदाहरण के लिए- जब व्यक्ति अपने अभिभावक या समाज के अन्य सदस्यों के व्यवहारों तथा अन्य मनोवृत्तियों का अनुकरण करने लगता है तो वह बदली हुई मनोवृत्ति को आंतरिक रूप से स्वीकार करता है और संतोष का अनुभव करता है।

③ आत्मसातीकरण (Internalization) :— Kelman के अनुसार आत्मसातीकरण की प्रक्रिया तब घटित होती है जब व्यक्ति दूसरे व्यक्ति या समूह के व्यवहार को इसलिए स्वीकार करता है क्योंकि वे उसके समरूप होते हैं। अतः आत्मसातीकरण की प्रक्रिया से हुआ मनोवृत्ति परिवर्तन व्यक्ति के लिए संतोषप्रद होता है। अतः जब इस प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति में मनोवृत्ति परिवर्तन होता है तब वह इन मनोवृत्तियों से संबंधित व्यवहार तथा भाव - संवेग को न केवल आंतरिक रूप से स्वीकार करता है बल्कि अपने भीतर वह सन्तुष्टि का भी अनुभव करता है अतः Kelman के अनुसार तीनों प्रक्रियाएँ अलग-अलग कार्य करती हैं और इन तीनों प्रक्रियाओं के द्वारा व्यक्ति सामाजिक प्रभाव को स्वीकार करता है।

मनोवृत्ति परिवर्तन में स्थायित्व के लिए अनुपालन, तादात्मीकरण तथा आत्मसातीकरण की प्रक्रियाओं का भिन्न-भिन्न उपयोग प्रकट होता है। अनुपालन की प्रक्रिया के सहारे बनाई गई मनोवृत्ति के परिवर्तन की सम्भावना तब हो जाती है जब प्रभाव डालने वाले व्यक्ति का प्रभाव या नियंत्रण समाप्त हो जाता है। तादात्मीकरण के फलस्वरूप हुए मनोवृत्ति परिवर्तन तभी तक बना रहता है जब तक व्यक्ति तथा प्रभावित व्यक्ति के बीच संतोषप्रद संबंध बना रहता है इसी प्रकार आत्मसातीकरण के द्वारा हुआ मनोवृत्ति परिवर्तन तभी तक कायम रहता है जब तक की उनसे संबंधित मूल्यों का निर्वाह किया जाता है।

इस प्रकार Kelman ने अपने सिद्धांत का एक स्पष्ट रूप प्रस्तुत करने में सफलता पाई है। परन्तु इनके सिद्धांत की आलोचनाएँ भी हुई हैं।

आलोचना (Limitations)

गुण (Merits) :—

(1) प्रारम्भ में Kelman (1961) ने अपने सिद्धांत को मनोवृत्ति परिवर्तन का त्रि-प्रक्रिया सिद्धांत (Three-Process theory of attitude change) कहा। फिर बाद में इसे 1961 में ही "मत-परिवर्तन की प्रक्रिया" (Process of opinion change) कहा। इसके बाद 1963 में अपने सिद्धांत को "सामाजिक प्रभाव के विश्लेषण का प्रारूप" (Frame work of analysis of social influence) कहा। इस अर्थ में Kelman का सिद्धांत अत्यन्त सशक्त सिद्धांत प्रतित होता है क्योंकि मनोवृत्ति परिवर्तन वास्तव में एक प्रकार का सामाजिक प्रभाव (Social influence) है। यह इस सिद्धांत का प्रथम गुण है।

(2) Kelman के सिद्धांत में तीन प्रक्रियाओं के रूप में तीन विकल्प हैं — (क) अनुपालन (Compliance) (ख) तादात्मीकरण (Identification) (ग) आत्मसातीकरण (Internalization) इन तीनों प्रक्रियाओं को हम तीन प्रकार के अवधारणाओं के रूप में समझ सकते हैं और इनका अध्ययन स्वतंत्र तथा आश्रित परिवर्त्यों के रूप में कर सकते हैं। ~~यह इसका दूसर~~ इस प्रकार यह सिद्धांत तीन नियमों का एक समूह बन जाता है। यह इसका दूसरा गुण है।